पात्र परिचय

मंच परे

लेखक	मनोहर श्याम जोशी
निर्देशक	रवि मोहन
सह-निर्देशन	पवन भारद्वाज, सोमबीर प्रजापत
मंच परिकल्पना, हस्त सामग्री	दीपक शर्मा
गीतकार	सुभाष शर्मा
संगीत निर्देशन	मनन भारद्वाज
सहायक संगीत निर्देशन	सार्थक श्रीवास्तव
गायक	मनन भारद्वाज, दिव्या महाजन
गीत मिश्रण	सूभी सिंह
नृत्य संरचना	राकेश राजपाल, हरिकिशोर ठाकुर
प्रकाश परिकल्पना	पवन भारद्वाज
संगीत संचालन	सोमबीर प्रजापत
वस्त्र विन्यास	डॉ. मधुदीप सिंह
रूपसज्जा	यशु भारद्वाज
चलचित्र निर्माण	मोहन बेताब, केहर रंधावा
मंच प्रबन्धक	अंकिता गुप्ता
मंच सहायक	प्रदीप भाटिया, हरुन अरोड़ा, कमलजीत बिष्ट, गौतम शर्मा, पारुल शर्मा, पूजा पाठक, गौरव सक्सेना, धीरज शर्मा, दीपांश शर्मा
संगीत निर्माण स्टुडियो	नमो: स्टुडियो, गुड़गांव
वस्त्र निर्माण	शिवालया फ़ैन्सी ड्रेस हाउस, सोनीपत

विशेष आभार

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार , नई दिल्ली

डॉ. अमित अग्रवाल (IAS)
(सचिव, महामहिम राज्यपाल हरियाणा , चंडीगढ़)

श्रीमति सुमेधा कटारिया (IAS)
(जिला उपायुक्त, कुरुक्षेत्र)

आदरणीया पूजा चाँवरिया (HCS)
(मुख्य कार्यकारी अधिकारी, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड)

ई-मेल – rasravimohan@gmail.com
संपर्क – 92155 12300

कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
के सहयोग से तैयार की गई प्रस्तुति

कुरुक्षेत्र गाथा

लेखक:	मनोहर श्याम जोशी
निर्देशक:	रवि मोहन
सह-निर्देशक:	पवन भारद्वाज
संगीत :	मनन भारद्वाज
गीतकार:	सुभाष शर्मा
मंच सज्जा:	दीपक शर्मा
रूप सज्जा:	यशु भारद्वाज
प्रकाश व्यवस्था:	पवन भारद्वाज

दिनांक एवं समय:
27 नवम्बर, 2017 सायं 6.30 बजे
स्थान:
अन्तर्राष्ट्रीय गीता जयन्ती महोत्सव
मेला ग्राऊंड, कुरुक्षेत्र

अवधि: 92 मिनट

नाटक के बारे में

भारतीय सांस्कृतिक -स्मृति की गौरवमयी ध्वनि का नाम है महाभारत-गीता। 'महाभारत' को उज्ज्वल चरित्रों का वन कहा जा सकता है। मूल कथानक में जितने भी चरित्र हैं वे अपने आप में पूर्ण हैं। भीष्म जैसा तेजस्वी और ज्ञानी, कर्ण जैसा गंभीर और वदान्य , द्रोण जैसा योद्धा, कुंती और द्रोपदी जैसी तेजीदिप्त नारियाँ, गांधारी जैसी पतिपरायण, श्री कृष्ण जैसा उपस्थित बुद्धि और गंभीर तत्वदश, युधिष्टर जैसा सत्यपरायण, भीम जैसा मस्तमौला, अर्जुन जैसा वीर, विदुर जैसा नीतिज्ञ चरित्र अत्यंत दुर्लभ है। कुरुक्षेत्र गाथा में महाभारत के इन सभी चरित्रों को उनकी सम्पूर्ण उज्ज्वलता से प्रस्तुत किया गया है। गीता से कर्म, भक्ति और मुक्ति के चिंतन-भंडार के साथ-साथ गीता केवल हिन्दू धर्म का सिद्धान्त या भाष्य भर नहीं है। भारत के हर बड़े व्याख्याता, चिंतक, दार्शनिक, समाज-सुधारक, युग प्रवर्तक, राजनीति के नेता ने गीता को अपने भीतर पुनः पुनः लिखा है। यह मात्र स्त्रोतग्रंथ ही नहीं पूरे भारतीय साहित्य में काव्य, नाटक, उपन्यास, प्रबंधकाव्य, लंबी कवितायें उसकी प्रधान कथा और छोटी कथाओं को आधार बनाकर लिखा गया है। इस कुरुक्षेत्र गाथा को 'महाकाव्य' या 'सागा' मात्र कहकर नहीं समझा जा सकता। ये गाथा कुरुवंशियों की युद्धगाथा है, इतिहास है, शास्त्र है, काव्य है, स्मृति है। "कुरुक्षेत्र गाथा" का सार-सर्वस्व यह महाभाव है की नर को अपने नारायण का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। नारायण का साथ छोड़ते ही नर अकेला और असहाय हो जाता है, उसका अनाथत्व आत्म-निर्वासन को जन्म देता है। जैसा कि सर्वजन को विदित है कि कुरुक्षेत्र की पावन धरती महाभारत काल की ऐतिहासिक धरा है जहां पर भगवान श्री कृष्ण जीवन का सार अर्थात गीता का उपदेश दिया जोकि सम्पूर्ण विश्व के लिए जीवन को दिशा देने का काम करता है। महाभारत के कुरुक्षेत्र युद्ध से ये संदेश पूरे विश्व में यह संदेश जाता है कि अन्याय कितना ही ताकतवर और चतुर हो तो भी जीत न्याय की होती है। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में महाभारत कथा को 'प्रकाश व ध्वनि' कार्यक्रम के माध्यम से रंगमंच के सभी तत्वों के साथ सजा कर लगभग 70 कलाकारों के साथ रास कला मंच, सफीदों, जीन्द हरियाणा प्रस्तुत करने जा रहा है कुरुक्षेत्र गाथा जैसी अद्भुत कलाकृति।

पात्र परिचय

पात्र	नाम
कथा गायन	राकेश राजपाल, शिवानी भण्डारी, मीनू त्रिपाठी, प्रियंका रावत
धृतराष्ट्र	दीपांश शर्मा
गांधारी	किरण दत्त
कृष्ण	चाँद शर्मा / अमित आहूजा
अर्जुन	आशीष सैनी
युधिष्टिर	चाँद भारद्वाज
भीम	गौरव चौहान
नकुल	नरेंद्र शर्मा
सहदेव	अंकित चौधरी
दुर्योधन	हनीश राजपूत
कर्ण	राहुल राठी
अभिमन्यु	प्रतीक शर्मा
भीष्म	सुनील भादू
द्रोणाचार्य	निखिल जायसवाल
कृपाचार्य	धंजित
अश्वत्थामा	धीरज शर्मा
द्रौपदी	पारुल कौशिक
संजय	गौरव सक्सेना
विदुर	कमलजीत बिष्ट
जयद्रथ	रवि जाखड
शकुनि	विक्रम मलिक
शिखंडी	अमित आहूजा / कमलजीत बिष्ट
दुशासन	हरुन
घटोत्कच	कोरस
कृतवर्मा	गुरप्रीत
धृष्टद्युम्न	गौरव शर्मा
अस्थि कलश	(कोरस) पूजा पाठक, अंकिता गुप्ता, मोनिका, पारुल कौशिक, शिवानी भण्डारी, मीनू त्रिपाठी, प्रियंका रावत
सैनिक/कोरस	हरिकिशोर ठाकुर, सुजीत कुमार, अमरेश कुमार, नन्दन कुमार, उज्जवल राज, शशिकांत कुमार, पृथ्वीराज सिंह, धंजित काकोटी, गुरप्रीत सिंह, दिनेश कुमार, प्रतीक शर्मा, रोशन कुमार

रूपसज्जा

यशुदास भारद्वाज का जन्म सन 1978 में जींद में हुआ। यशु जी का कला और शिल्प के क्षेत्र में पूरा अनुभव है। उन्होने अपने आप को सेट डिजाइनर, चित्रकार और मेकअप कलाकार के रूप में स्थापित किया। यशु जी ने अपनी स्नातक की डिग्री चंडीगढ़ से की। 18 साल के अनुभव के साथ, उन्होने इस क्षेत्र में लगभग प्रसिद्दि प्राप्त की है। साल 2002 में उनको उत्तर क्षेत्रीय संस्कृति केंद्र (भारत सरकार) से 'सर्वश्रेष्ठ मेकअप मैन का पुरस्कार मिला। वे चित्रकला में राज्यपाल पुरस्कार जीतने के स्तर तक अपने छात्रों को लेकर गए। उन्होने कौशल मंच परिकल्पना और रूपसज्जा कलाकार के रूप में थिएटर में किया है।

यशुदास भारद्वाज

वस्त्र विन्यास

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र की जनसंचार की प्राध्यापिका डॉ॰ मधु दीप सिंह गत दस वर्षों से रंगमंच की विभिन्न विधाओं से किसी ना किसी रूप में जुड़ी रही हैं इन्होंने अपने अभिनय का कौशल राष्ट्रीय स्तर के नाट्य उत्सवों में किया है। कला प्रेमी होने के नाते अभिनय के साथ साथ रंगमंच की अन्य विधाओं में भी बखूबी योगदान दिया है जिनमें लेखन, संगीत, चित्रकला व वस्त्र विन्यास प्रमुख है। NIFD से फ़ैशन डिज़ाइनिंग का औपचारिक प्रशिक्षण होने के कारण डॉ॰ मधु दीप सिंह का रुझान रंगमंच में परिधान व वेशभूषा के निर्देशन में भी रहा। इन्होने रंगमंच के लिए मैं कहानी हूँ, अग्नि और बरखा, परसाई की चौपाल व अन्य कई नाटकों के लिए वस्त्र विन्यास किया है। इन्होने बतौर अभिनेत्री भारत के अलग-अलग राज्यों में 70 से भी अधिक अपने नाटको की प्रस्तुति दी है जिनमे से प्रमुख है जिस लाहौर नी वेख्या ओ जनम्या नहीं, दूसरा आदमी दूसरी औरत, मैं कहानी हूँ, व तीन संबंध हैं।

डॉ. मधु दीप सिंह

मंच सज्जा

दीपक कुमार

चित्रकार दीपक कुमार का जन्म 5 सितंबर 1969 को हरियाणा प्रांत के पानीपत शहर में हुआ। बचपन से ही इनकी रुचि कला एवं कलात्मक कृतियों में रही है। दीपक कुमार बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं और ये चित्रकला के अलावा मूर्तिकला, शिल्पकला एवं संगीत की भी अच्छी समझ रखते हैं। अपने सौम्य व्यक्तित्व के कारण ये सबके दिलों पर अपनी अनूठी छाप छोड़ते हैं। इन्होने चित्रकला की साधना प्रसिद्ध चित्रकार श्री सोमदत्त शर्मा (जीन्द) जी के सानिध्य में की। इनकी खास रुचि यथार्थवादी चित्रकला में है। ये रास कला मंच, सफीदों थियेटर ग्रुप से काफी लंबे समय से जुड़े हुए हैं। इन्होने 'नागमंडल' और 'कुरुक्षेत्र गाथा' आदि नाटकों में मंच परिकल्पना, मंचसज्जा व हस्त सामग्री की है।

इनके अनुसार 'एक अच्छी अभिव्यक्ति के लिए कलाकार को भावुक होना बहुत आवश्यक है'। इनके जीवन का मंत्र है – सादा जीवन, उच्च विचार।

स्वर प्रधाता

रवि मोहन	कृष्ण
हनीश	राजपूत दुर्योधन
चाँद भारद्वाज	युधिष्टिर
किरण दत्त	गांधारी
पारुल कौशिक	द्रौपदी
सुनील भादु	भीष्म पितामह
गौरव चौहान	भीम
पवन भारद्वाज	संजय
दीपांश शर्मा	धृतराष्ट्र, घटोत्कच
आशीष सैनी	कर्ण, अभिमन्यु
गौरव सक्सेना	अर्जुन
धीरज शर्मा	अश्वत्थामा
सोमबीर प्रजापत	विदुर
रहीश	द्रोणाचार्य
निखिल जायसवाल	द्वापर
सोमबीर प्रजापत	कृपाचार्य

लेखक के बारे में

मनोहर श्याम जोशी

9 अगस्त, 1933 को अजमेर में जन्मे, लखनऊ विश्वविद्यालय के विज्ञान स्नातक मनोहर श्याम जोशी कल के वैज्ञानिक की उपाधि पाने के बावजूद रोजी रोटी की खातिर छात्र जीवन से ही लेखक और पत्रकार बन गए। अमृतलाल नागर और अज्ञेय इन दो आचार्यों का आशीर्वाद इन्हे प्राप्त हुआ। स्कूल मास्टरी, क्लर्की और बेरोजगारी के अनुभव बटोरने के बाद अपने 21 वें वर्ष से वे पूरी तरह मसिजीवी बन गए।

प्रेस, रेडियो, टीवी, वृतचित्र, फिल्म ,विज्ञापन-सम्प्रेषण का ऐसा कोई माध्यम नहीं जिसके लिए उन्होंने सफलतापूर्वक लेखन-कार्य न किया हो। खेल-कूद से लेकर दर्शनशास्त्र तक ऐसा कोई विषय नहीं जिस पर उन्होने कलम न उठाई हो। आलसीपन और आत्मसंशय उन्हें रचनाएँ पूरी कर डालने और छपवाने से हमेशा रोकता चला आया। इनकी पहली कहानी तब छपी थी जब वह अठारह वर्ष के थे लेकिन पहली बड़ी साहित्यिक कृति तब प्रकाशित करवाई जब सेंतालीस वर्ष के होने आए।

केंद्रीय सूचना सेवा और टाइम्स ऑफ इंडिया समूह से होते हुए सन 1967 में हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन में साप्ताहिक हिंदुस्तान के संपादक बने और वहीं एक अँग्रेजी साप्ताहिक का भी सम्पादन किया। टेलिविजन धारावाहिक हम लोग लिखने के लिए सन 1984 में संपादक की कुर्सी छोड़ दी और तब से आजीवन स्वतंत्र लेखन किया।

उन्होने ही टेलीविजन में धारावाहिकों की शुरुआत कराई ,जिसके कारण उन्हे भारतीय सोप ओपेरा का जनक कहा गया। **हम लोग के अलावा बुनियाद, हमराही, मुंगेरीलाल के हसीन सपने व जमीन-आसमान** जैसे चर्चित धारावाहिकों के साथ उन्होने **हे राम , पापा कहते है , भ्रष्टाचार** आदि अनेक फिल्मों की भी पटकथाएँ लिखी। क्याप उपन्यास के लिए उन्हे वर्ष 2005 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 30 मार्च 2006 को श्री जोशी जी का निधन हो गया।

गीतकार

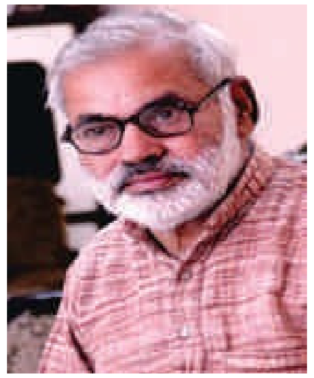

सुभाष शर्मा

सुभाष शर्मा का जन्म 1948 हरियाणा के करनाल ज़िले मे घरोंडा नाम के एक छोटे से कस्बे मे हुआ। हरियाणा सरकार के बिज़ली विभाग से 2006 मे ये प्रथम श्रेणी अधिकारी के रूप मे रिटायर हुए। गीतकार के रूप मे इन्होने अपनी शुरुआत केवल 14 वर्ष की आयु (1962) मे ही कर दी थी। आपकी विशेष रुचि देश-भक्ति और देशहीत मे लिखने की रही है। बाद मे आपने फिल्मों व एल्बमों के लिए भी लिखना शुरू किया। इनके द्वारा लिखे गए गीत बॉलीवुड के विभिन्न गायकों व गायिकों ने गाये। उनमे से प्रमुख है, सुरेश वाडेकर ,सोनू निगम , विनोद सहगल , महेन्द्र कपूर , शान , जावेद अली व सुनिधि चौहान , सपना अवस्थी और मधु श्री , इत्यादि शामिल है। आपने रामानन्द सागर द्वारा बनाई गये रामायण सिरियल का हरियाणवी मे अनुवाद हरियाणा न्यूज़ चैनल के लिए किया। आपने तहलका चैनल के गीत सुरीले बोल सुरीले , कहानी एक गाँव की के शीर्षक गीत भी लिखे है। हरियाणा सरकार के नंबर वन हरियाणा शीर्षक के नाम से लगभग 85 विज्ञापनो का लेखन आपने किया है। आपने " नशे की मार " फिल्म के गीत , कहानी पटकथा और संवाद लिखे। आप द्वारा लिखी गयी फिल्म " सनम फिर मिलेंगे " निर्माणाधीन है। आपने रास कला मंच व कई महाविधालयों व विश्वविधालयों की नाट्य प्रस्तुतियो के लिए गीत लिखे। उनमे से मुख्य तौर पर अक्स तमाशा , नागमंडल , सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक , सुगंधी , हीर रांझा , और चंदू भाई नाटक करते है के गीत शामिल है।

निर्देशक के बारे में

रवि मोहन रास

अभिनेता, निर्देशक, प्रशिक्षक और मार्गदर्शक रवि मोहन रंगमंच और मीडिया के साथ पिछले लगभग 20 वर्षों से जुड़े है। 2002 मे इन्होंने अपने पिता श्री रास बिहारी जी के साथ अपना सांस्कृतिक दल 'रास कला मंच', सफीदों के नाम से आरंभ किया और युवा निर्देशक के रूप में पूरे देश भर में अपनी पहचान बनाई। रवि मोहन "रास" ने अभी तक 35 नाटको का निर्देशन जैसे - **नागमंडल, हीर-रांझा, घासीराम कोतवाल, गुरु दक्षिणा, उत्तररामचरित, आज का हरिश्चन्द्र, जब मैं सिर्फ औरत होती हूँ, आत्म सत्य, दिमाग ए हस्ती दिल की बस्ती है कहाँ है कहाँ, अंधा युग, गधे की आत्मकथा, चंदु भाई नाटक करते हैं, मैं कहानी हूँ, परसाई की चौपाल, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, मिस्सू चन्नी, भगव्दज्जुकम, नाचनी, आषाढ़ का एक दिन, अक्स, तमाशा, सुगंधी, अग्नि और बरखा, गूंगी चीखें, कुमार स्वामी, दहलीज, कहन कहानी कथन, कुरुक्षेत्र गाथा, दूसरा आदमी दूसरी औरत व मैकबेथ** किया है और इन्होने निर्देशन के साथ-साथ बतौर अभिनेता 15 नाटको में जैसे - **आत्म सत्य, जब मैं सिर्फ एक औरत होती हूँ, अंधा युग, हम तो ऐसे ही हैं, पोस्टर, दूसरा आदमी दूसरी औरत, बंद गली का आखरी मकान, द मैन विदाऊट शैडो, लख्मीगाथा, तीन संबंध, चंदु भाई नाटक करते हैं व मैं कहानी हूँ** में मुख्य भूमिका निभाई है । कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से इतिहास विषय मे लघू शोध करने के बावजूद इनका रंगमंच में व्यवसायिक रूप से आने का पूरा श्रेय ये श्रीमति डॉली अहलूवालिया तिवारी व श्री कमल तिवारी जी को देते है और ये अपने आपको उनका ऋणी मानते है जिनकी वजह से इन्होने अपनी रंग-शिक्षा संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली व राष्ट्रीय नाटच विद्यालय, दिल्ली के द्वारा आयोजित नाट्य कार्यशालाओं मे प्राप्त की जिसमें इन्हें वरिष्ठ रंग-शिक्षको से रंगमंच की बारीकियों को सीखने का मौका मिला।

इन्होंने भारत देश मे आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नाट्य समारोह मे कई नाटको की प्रस्तुतियां की है। इन्हे अपने नाटको के लिए कई रंग पुरस्कार व सम्मान

सहायक निर्देशक के बारे में

पवन भारद्वाज

पवन भारद्वाज हर समय जीवन में थियेटर का अध्ययन करते रहते हैं। उनके विचार में थियेटर ना सिर्फ नाटक, अभिनय और प्रदर्शन कला है अपितु इन सबकी मिली – जुली कला है। थियेटर की बारिकियों व गहराई को समझने के लिए उन्होने पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से सन 2012 में भारतीय थियेटर में स्नातकोत्तर की उपाधि ली। एक अभिनेता के रूप में उन्होने 'मेरा दोस्त', 'पैसा बोलता है', 'समझदार लोग', 'धर्म संकट', 'दा टैम्पैस्ट', 'बड़े भाईसाहब', 'सद्गति', 'थ्री पैनी ओपेरा', 'हरियाणा ग्रहण', प्रस्तुतियों में काम किया। एक निर्देशन के रूप में उन्होने ,समझदार लोग, धर्म संकट, जल रहा पाकिस्तान, हज़ारे हम तुम्हारे, पंचायत, गुलाम पंछी, में अपना निर्देशन दिया। एक सह-निर्देशक के रूप में 'मैकबैथ', 'नाचनी', 'गुरुदक्षिणा', 'दहलीज', 'गूंगी चीखें', 'कपालिका', 'नागमंडल', 'घासीराम कोतवाल', 'भगवत अज्जुकम', 'हीर-रांझा', और लेखक के तौर पर 'पंचायत', 'गुलाम पंछी', व 'हरियाणा ग्रहण', में अपना अहम योगदान दिया। वर्तमान समय में पवन भारद्वाज रास कला मंच में बतौर प्रकाश व्यवस्था व रंगमंच के अन्य तकनीकी पहलुओं पर कार्य कर रहे हैं।

संगीत निर्देशक के बारे में

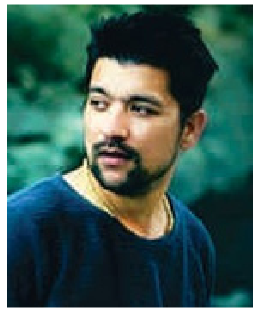
मनन भारद्वाज

मनन भारद्वाज जिन्होंने अल्प समय में ही गीत -संगीत की दुनिया में अपनी अलग ही पहचान बनाई है और ये संगीतकार के रूप में किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं । इन्होने अभी तक 'व्हाइट कॉफी प्रोडक्शन हाउस व 'नम्योहो स्टूडियो' के बैनर तले लगभग 250 के करीब म्यूजिक एल्बम व लघु फिल्मों का निर्माण किया है। ये अपनी लगन व श्रम-साधना के बलबूते पर बॉलिवुड में भी अपना नाम दर्ज करवा चुके हैं। नम्योहो स्टूडियो के डायरेक्टर मनन भारद्वाज ने सन् 2016 में रिलीज हुई फिल्म 3 ए एममें अपने गीत व संगीत देकर सफलता हासिल की और अपनी अलग पहचान बनाई । पीटीसी पंजाबी, एमएच1 आदि टी वी चैनल्स पर इनके द्वारा गाए गए गीत लोगों की धड़कन बन चुके हैं। विशेष रूप से एल्बम "सोचता हूँ" देश भर के युवाओं की पसंद बन गई । नैसर्गिक प्रतिभा को उभारते हुए मनन भारद्वाज ने स्वयं को संगीतकार व गायकी के साथ-साथ कलाकार के रूप में भी स्थापित कर लिया है। इन्होने बचपन में ही विभिन्न मंचो पर अपनी प्रस्तुति देने के साथ-साथ दूरदर्शन पर भी अपनी सुरीली आवाज का जादू बिखेरा है। 2003 में मोहम्मद रफी नाइट गुरुग्राम व 2004 में दिल्ली में आयोजित सा रे गा मा कार्यक्रम में प्रथम विजेता रहे। इन्होने 2009 में व्हाइट कॉफी हाउस एंटरटेनमेंट प्रा. लि. कम्पनी की स्थापना गुरुग्राम में की। जिसमें आज नए युवा गायकों को अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर दिया जा रहा है। इनके द्वारा रंग संगीत में 'गूंगी चीखें', 'कुरुक्षेत्र गाथा' 'घासीराम कोतवाल' व उत्तररामचरित आदि नाटकों का संगीत निर्देशन किया गया।